कहानी

बरगद के पेड़ की सीख

एक समय की बात है, एक छोटे से हरे-भरे गांव में मोहन नाम का एक प्यारा सा बच्चा रहता था. गांव में कच्ची गलियां थीं, चारों तरफ खेत थे, और हर सुबह पक्षियों की चहचहाहट से दिन शुरू होता था. मोहन बहुत ही जिज्ञासु था. उसे हर चीज़ के बारे में जानना अच्छा लगता था. उसके दादा-दादी उसे हर रात सोने से पहले कहानियाँ सुनाते थे, और वही कहानियाँ उसके दिल में बसती जा रही थीं.

मोहन को अपने दादा के साथ समय बिताना बहुत पसंद था. उसके दादा शांत स्वभाव के थे और उनके पास हर सवाल का जवाब एक कहानी के रूप में होता था. एक दिन सुबह-सुबह मोहन दादा के साथ खेत की ओर निकल पड़ा. रास्ते में ठंडी हवा चल रही थी, पेड़ों की पत्तियां सरसराती थीं और दूर कहीं गायें चर रही थीं. चलते-चलते मोहन की नजर एक बहुत पुराने और विशाल बरगद के पेड़ पर पड़ी. वह पेड़ इतना बड़ा था कि उसकी छाया में पूरा झुंड आराम कर सकता था. उसकी जड़ें जमीन से बाहर निकलकर ऐसे फैली थीं जैसे किसी बूढ़े के हाथ हों. मोहन रुक गया और बोला, 'दादा, ये पेड़ इतना अलग क्यों लगता है?' दादा मुस्कुराए और धीरे से बोले, 'बेटा, इस पेड़ के नीचे एक बहुत पुरानी कहानी छुपी है. ऐसी कहानी जो दिल को सिखाती है कि अच्छाई क्या होती है.' मोहन की आंखें चमक उठीं. उसने तुरंत कहा, 'दादा, मुझे अभी सुनाओ ना!' दादा पेड़ के नीचे बैठ गए और मोहन भी उनके पास आकर बैठ गया. हल्की हवा चल रही थी, और ऐसा लग रहा था जैसे पेड़ भी कहानी सुनने के लिए तैयार हो.

दादा ने कहना शुरू किया, 'बहुत साल पहले, इसी गांव में एक गरीब लकड़हारा रहता था. उसका नाम रामू था. वह बहुत मेहनती था. हर सुबह सूरज निकलने से पहले उठ जाता, जंगल जाता, लकड़ियां काटता और उन्हें बाजार में बेचकर अपने परिवार के लिए खाना लाता.'

रामू के पास ज्यादा कुछ नहीं था, लेकिन उसका दिल बहुत बड़ा था. एक दिन जब वह जंगल में लकड़ी काट रहा था, तभी उसे एक धीमी सी आवाज सुनाई दी. वह इधर-उधर देखने लगा, तो उसे एक छोटा सा पक्षी दिखाई दिया जो घायल था और उड़ नहीं पा रहा था. रामू ने तुरंत अपना काम छोड़ दिया. उसने उस पक्षी को धीरे से उठाया, अपने गमछे से उसका घाव बांधा और पास के तालाब से पानी लाकर उसे पिलाया. वह उसे अपने घर ले आया और कई दिनों तक उसकी देखभाल करता रहा.

मोहन ध्यान से सुन रहा था, जैसे वह सब कुछ अपनी आंखों से देख रहा हो. कुछ दिनों में वह पक्षी ठीक हो गया. उसके पंख फिर से मजबूत हो गए. एक सुबह वह उड़ने के लिए तैयार हुआ. उड़ने से पहले उसने रामू की ओर देखा और जैसे धन्यवाद कह रहा हो. दादा बोले, 'बेटा, उस समय कुछ अजीब हुआ. वह पक्षी इंसानों की भाषा में बोला, 'तुमने मेरी जान बचाई है, मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगा.'' मोहन चौंक गया, 'सच में दादा?'

दादा हंसते हुए बोले, 'कहानी है बेटा, इसमें सब कुछ हो सकता है.' रामू ने मुस्कुराकर कहा, 'मुझे किसी मदद की जरूरत नहीं, तुम खुश रहो बस.' और वह अपने काम में लग गया. लेकिन कुछ ही समय बाद गांव में भयानक सूखा पड़ गया. खेत सूख गए, कुएं खाली हो गए, और लोगों के पास पीने का पानी भी नहीं बचा. हर कोई परेशान था. रामू भी चिंतित था, लेकिन वह हार नहीं मान रहा था. तभी एक दिन वही पक्षी वापस आया. उसने रामू से कहा, 'मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें एक जगह दिखाता हूं.'

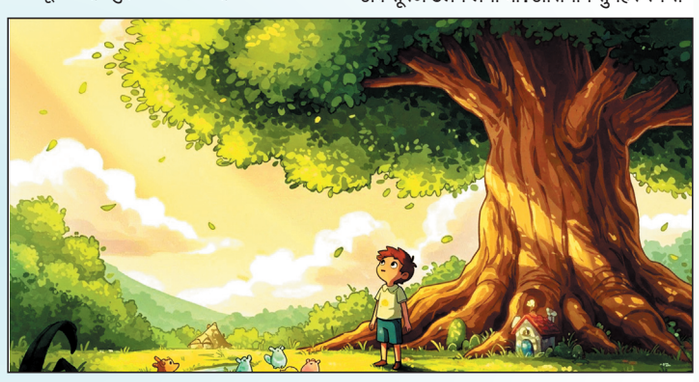

रामू उसके पीछे-पीछे जंगल के अंदर गया. वे बहुत दूर तक चले. आखिर में वे एक छुपी हुई जगह पर पहुंचे, जहां साफ और ठंडा पानी एक छोटे से झरने के रूप में बह रहा था. रामू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा. उसने तुरंत गांव जाकर सबको यह खबर दी. गांव वाले वहां पहुंचे और उस पानी को गांव तक लाने का रास्ता बनाया. धीरे-धीरे खेत फिर से हरे हो गए, कुएं भर गए और गांव में खुशहाली लौट आई.

सब लोग रामू की तारीफ करने लगे, लेकिन रामू हमेशा यही कहता, 'यह सब उस छोटे से पक्षी की मेहरबानी है.' मोहन ने दादा की ओर देखा और धीरे से कहा, 'दादा, अगर रामू उस दिन पक्षी की मदद नहीं करता, तो क्या यह सब होता?'

दादा ने प्यार से कहा, 'नहीं बेटा. यही तो सीख है इस कहानी की. जब हम बिना किसी लालच के किसी की मदद करते हैं, तो वह अच्छाई कभी न कभी हमारे पास लौटकर जरूर आती है. अब सूरज ढलने लगा था. आसमान सुनहरे रंग से भर गया था. मोहन ने उस बरगद के पेड़ को फिर से देखा. अब उसे वह सिर्फ एक पेड़ नहीं लगा, बल्कि एक ऐसी जगह लगी जहां अच्छाई की कहानी हमेशा जिंदा रहेगी. उस रात मोहन ने दादी से कहा, 'दादी, मैं भी बड़ा होकर रामू जैसा बनूंगा. दादी ने मुस्कुराकर उसे गले लगाया और कहा, 'बस यही तो हम चाहते हैं बेटा, तुम अच्छे इंसान बनो.

'धीरे-धीरे मोहन की आंखें बंद हो गईं. लेकिन उसके मन में एक बात हमेशा के लिए बस गई थी, कि छोटी-सी मदद भी किसी की जिंदगी बदल सकती है. और उसी दिन से, जब भी मोहन किसी को परेशानी में देखता, वह बिना सोचे उसकी मदद करने के लिए आगे बढ़ जाता.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर:- 1. मछली की संख्या में अंतर, 2. समुद्री घोड़े के रंग में अंतर, 3. दूसरी तस्वीर में छोटी मछली गायब, 4. चक्र का एक पहिया गायब, 5. जलपरी के हाथ की सीप, 6. समुद्री मशरूम की संख्या में अंतर

कविता

पेड़ हमारे दोस्त

पेड़ हमारे सच्चे दोस्त,
देते हमको छाया रोश.
हरे-भरे ये लगते प्यारे,
जैसे धरती के सितारे.

फल-फूल हमको ये देते,
पक्षी इनमें घर हैं लेते.
आओ मिलकर पेड़ लगाएं,
धरती को फिर हरा बनाएं.

भूल भुलैया

रंग भरो

बिंदु मिलाओ

जानकारी

काला तेल, बड़े काम

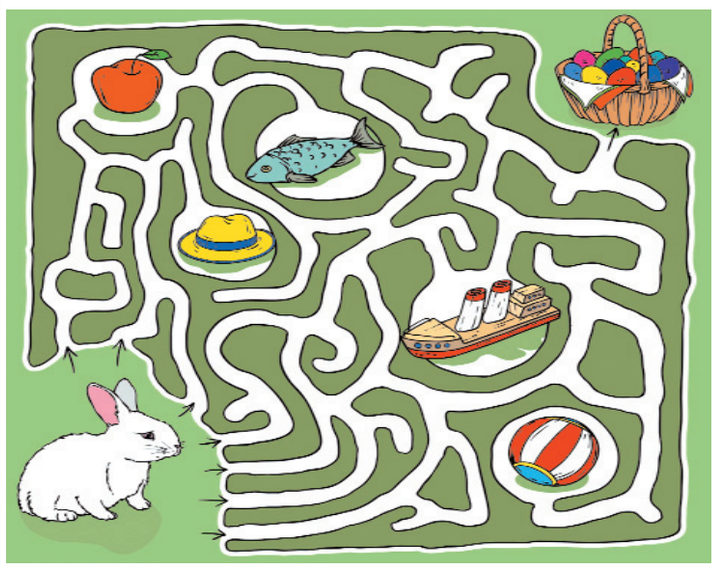

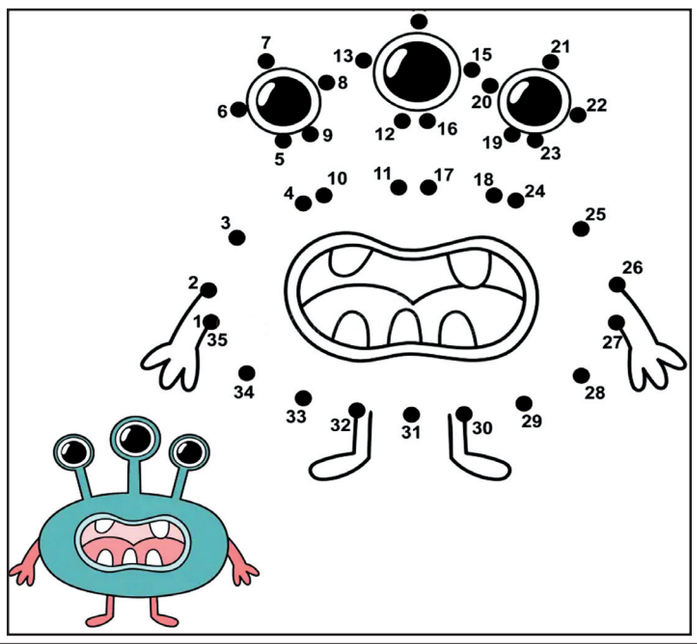

कच्चा तेल, जिसे अंग्रेज़ी में क्रूड ऑयल कहा जाता है, धरती के अंदर बहुत गहराई में पाया जाने वाला एक खास तरह का तरल पदार्थ होता है. यह काला या गहरा भूरा रंग का होता है और थोड़ा चिपचिपा भी होता है. इसे जमीन के नीचे लाखों साल पहले दबे हुए पौधों और छोटे-छोटे जीवों से बना माना जाता है. समय के साथ ये जीव मिट्टी और पत्थरों के नीचे दबते गए और धीरे-धीरे कच्चे तेल में बदल गए.

कच्चा तेल सीधे इस्तेमाल के काम नहीं आता. इसे निकालने के बाद बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों में साफ और अलग-अलग चीजों में बदला जाता है. इन फैक्ट्रियों को रिफाइनरी कहा जाता है. रिफाइनरी में कच्चे तेल को गर्म किया जाता है और फिर उससे पेट्रोल, डीजल, गैस, केरोसिन और प्लास्टिक जैसी चीजें बनाई जाती हैं. यही वजह है कि कच्चा तेल हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में बहुत काम आता है.

आपने देखा होगा कि गाड़ियां पेट्रोल या डीजल से चलती हैं. ये दोनों चीजें भी कच्चे तेल से ही बनती हैं. इसके अलावा, रसोई में इस्तेमाल होने वाली गैस, सड़क बनाने वाला तारकोल, और कई तरह के खिलौने और प्लास्टिक की चीजें भी कच्चे तेल से ही बनती हैं.

कच्चा तेल जमीन के नीचे गहरे कुओं को खोदकर निकाला जाता है. बड़े-बड़े मशीनों की मदद से इसे बाहर लाया जाता है. समुद्र के अंदर भी कई जगह कच्चा तेल पाया जाता है, जहां से खास जहाजों और मशीनों के जरिए इसे निकाला जाता है.

लेकिन कच्चा तेल बहुत उपयोगी होने के साथ-साथ पर्यावरण के लिए नुकसानदायक भी हो सकता है. अगर यह समुद्र या जमीन पर फैल जाए, तो इससे पानी और मिट्टी खराब हो जाती है और जानवरों को भी नुकसान पहुंचता है. इसलिए इसे संभालकर इस्तेमाल करना बहुत जरूरी है. इस तरह कच्चा तेल एक बहुत महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जो हमारी जिंदगी को आसान बनाता है. लेकिन हमें इसका सही तरीके से उपयोग करना चाहिए, ताकि पर्यावरण भी सुरक्षित रहे और आने वाली

लेदर के दिलचस्प तथ्य

- लेदर जानवरों की खाल से बनाया जाता है, जैसे गाय, बकरी और भेड़.
- सही देखभाल करने पर लेदर कई सालों तक चल सकता है.
- प्राचीन समय में लेदर का उपयोग कपड़े और जूते बनाने के लिए होता था.
- लेदर पानी को कुछ हद तक रोक सकता है, लेकिन पूरी तरह वॉटरप्रूफ नहीं होता.
- असली लेदर समय के साथ और ज्यादा मुलायम और सुंदर हो जाता है.
- लेदर बनाने की प्रक्रिया को 'टैनिंग' कहा जाता है.
- दुनिया का सबसे महंगा लेदर अक्सर मगरमच्छ और साँप की खाल से बनता है.
- नकली लेदर (फॉक्स लेदर) प्लास्टिक से बनाया जाता है.

प्रेरक प्रसंग

सावरकर : साहस और देशभक्ति की मिसाल

विनायक दामोदर सावरकर जिन्हें हम वीर सावरकर के नाम से जानते हैं, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक साहसी क्रांतिकारी, लेखक और विचारक थे. उनका जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले में हुआ था. बचपन से ही उनमें देशभक्ति की भावना प्रबल थी और वे भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे.

सावरकर ने युवावस्था में ही क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया था. उन्होंने 'अभिनव भारत' नामक संगठन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति की भावना जगाना और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना था. बाद में वे पढ़ाई के लिए लंदन गए, जहां उन्होंने 'इंडिया हाउस' में रहकर भारतीय छात्रों को संगठित किया और उन्हें आजादी के लिए प्रेरित किया.

लंदन में रहते हुए सावरकर ने 1857 की क्रांति पर एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने इसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम बताया. उनकी इस पुस्तक ने युवाओं के मन में आजादी की नई चिंगारी जलाई. अंग्रेज सरकार उनकी गतिविधियों से डर गई और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया.

1910 में सावरकर को भारत लाया गया और उन पर कई गंभीर आरोप लगाए गए. उन्हें दो आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई, जो कुल मिलाकर 50 वर्षों की सजा थी. उन्हें अंडमान-निकोबार की कुख्यात 'सेलुलर जेल' भेजा गया, जिसे 'काला पानी' भी कहा जाता है. वहां उन्होंने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताया.

जेल में सावरकर को कठोर श्रम करना पड़ता था, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी. उन्होंने जेल की दीवारों पर कील और कोयले से कविताएं और लेख लिखे, ताकि उनके विचार जीवित रह सकें. उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और देशभक्ति ने उन्हें हर कठिनाई का सामना करने की ताकत दी.

रिहाई के बाद भी सावरकर ने समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में योगदान दिया. उन्होंने छुआछूत और जाति भेद के खिलाफ आवाज उठाई और समाज को एकजुट करने का प्रयास किया. वे एक प्रखर वक्ता और लेखक भी थे, जिनके विचार आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं.

वीर सावरकर का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची देशभक्ति केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कर्मों में होती है. उन्होंने अपने जीवन का हर क्षण देश की स्वतंत्रता और समाज की भलाई के लिए समर्पित कर दिया. उनका साहस, त्याग और समर्पण आज भी भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है.

बूझो तो जानें

- मैं चलता नहीं, फिर भी चलता हूँ, बताओ मैं क्या कहलाता हूँ?
  उत्तर: घड़ी
- ऐसी कौन सी चीज है जो पानी में गिरती है, पर गीली नहीं होती?
  उत्तर: परछाई
- एक पैर है, छतरी जैसी, धूप में काम, बारिश में फेल.
  उत्तर: छाता
- काला है पर कौवा नहीं, लंबा है पर साँप नहीं.
  उत्तर: बाल
- ऐसी कौन सी चीज है जो टूटने पर आवाज नहीं करती?
  उत्तर: वादा
- चार पैर हैं पर चल नहीं सकता, घर में रहता, काम आता.
  उत्तर: मेज
- दिन में सोता, रात में जागता, चुपके-चुपके काम करता.
  उत्तर: उल्लू
- ऐसी कौन सी चीज है जो जितनी खींचो उतनी छोटी होती जाती है?
  उत्तर: सिगरेट

हंसी-ठिठोली

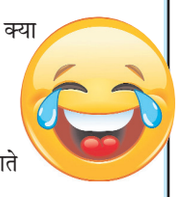

- टीचर: बताओ सबसे तेज क्या दौड़ता है?
  बच्चा: बिजली!
  टीचर: कैसे
  बच्चा: क्योंकि लाइट आते ही सब भागते हैं
- मम्मी: बेटा पढ़ाई कैसी चल रही है?
  बेटा: मम्मी, बस चल रही है... दौड़ नहीं रही
- टीचर: तुम स्कूल देर से क्यों आए?
  बच्चा: मम्मी-पापा लड़ रहे थे
  टीचर: तो?
  बच्चा: एक जूता मम्मी के पास था, एक पापा के पास
- पापा: तुम बड़े होकर क्या बनोगे?
  बेटा: मैं बड़ा होकर छुट्टी बनूंगा
- टीचर: 2+2 कितना होता है?
  बच्चा: 5
  टीचर: गलत!
  बच्चा: ठीक है, 4 ही सही
- मम्मी: दूध पी लो
  बेटा: नहीं पीऊंगा
  मम्मी: सुपरमैन भी दूध पीता था
  बेटा: तो मुझे भी उड़ना सिखाओ
- दोस्त: तुम इतनी जल्दी कैसे उठ जाते हो?
  दूसरा: क्योंकि मेरी नींद खत्म हो जाती है

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.